: पंचम अध्याय :

हिमांशु जोशी के आँचलिक उपन्यासों की विशेषताएँ

: पंचम अध्याय :

5.'हिमांशु जोशी के आँचलिक उपन्यासों की विशेषताएँ'

प्रस्तावना

5.1 समाज चित्रण।

5.2 अज्ञानी, धार्मिक, अंधविश्वासी और परंपराप्रिय समाज का वर्णन।

5.3 विवाह प्रकारों का चित्रण।

5.4 जीवन व्यापार चित्रण।

5.5 कौतूहल तथा आश्चर्य की भावनाओं का वर्णन।

5.6 अनेक पात्रों का चित्रण।

5.7 सामाजिक कुप्रथाओं के विरूद्ध विद्रोह करनेवाले पात्रों का चित्रण।

5.8 पात्रों की परिवर्तित मनस्थिति का वर्णन।

5.9 विविध समस्याओं का चित्रण।

5.10 शोषण, अत्याचार एवं राजनीतिकता पर सुक्ष्म दृष्टि।

5.11 वर्णन शैली।

5.12 संस्कृति तथा सौंदर्यात्मक दृष्टि।

5.13 छोटे-छोटे संवाद तथा स्थानीय कहावतें, मुहावरें, लोकोक्ति और गालियों का प्रयोग।

5.14 स्थानीय बोली का प्रयोग।

5.15 'अरण्य' और 'कगार की आग' उपन्यासों में समानताएँ और विशेषताएँ।

निष्कर्ष

प्रस्तावना :-

आँचलिक उपन्यासों में मूल रूप में आँचलिक प्रदेश की स्थिति तथा वहाँ की विभिन्न विशेषताओं को दर्शाया जाता हैं। आँचलिक प्रदेश की विशेषताएँ किसी दूसरे प्रदेश की विशेषताओं से अलग होती है। इसी कारण इसकी अलग विशेषताओं को लेकर हिमांशु जोशी जी ने दो आँचलिक उपन्यासों का निर्माण किया। हिमाचल प्रदेश के दो आँचलिक प्रदेश 'लधौंन' और 'कनाली' का वर्णन उनके दो उपन्यासों में मिलता है। जोशी जी खुद वहाँ रह चुके हैं। उनका बचपन वहाँ बीता हैं। इसीलिए वहाँ की हर स्थिति का यथार्थ वर्णन किया है। लेखक ने राजनीतिक, सामाजिक, धार्मिक, आर्थिक, सांस्कृतिक आदि स्थितियों को लेकर तथा विभिन्न समस्याओं से उत्पन्न स्थितियों को लेकर पहाड़ी अंचल का चित्र हमारे सम्मुख प्रस्तुत किया है। उनके 'अरण्य' और 'कगार की आग' इन दोनों आँचलिक उपन्यासों की विशेषताएँ निम्न हैं -

5.1 समाज चित्रण :-

जोशी जी ने इन दो उपन्यासों में किसी एक व्यक्ति को लेकर कथानक का निर्माण नहीं किया है। इनमें अनेक पात्र है। कथानक के बिखराव के कारण सभी पात्र अपना-अपना स्थान बनाए रखे हैं। कथावस्तु हर एक पात्र के इर्द-गिर्द घूमती है। इसी कारण इसमें सामूहिक जन-जीवन का वर्णन मिलता है। 'लधौंन' तथा 'कनाली' में समाज बिखरा हुआ है लेकिन उनकी राजनीतिक, सामाजिक, धार्मिक, आर्थिक, सांस्कृतिक समस्याएँ एक ही हैं। सामान्य तौर पर देखें तो अनेकों से बना समाज होता है। इसी कारण व्यक्तिगत समस्याओं का चित्रण न मिलकर समाज का चित्रण मिलता है। आँचलिक उपन्यास में सामाजिक परिस्थितियों का अंकन होना, उपन्यास की सफलता की दृष्टि से महत्त्वपूर्ण है। इन दो उपन्यासों में मानवी प्रवृत्तियों को स्पष्टता से दर्शाया है। एक उदाहरण दृष्टव्य है -

''सुख के दिनों में सभी ने साथ दिया था। जहाँ तक दृष्टि जाती, अपने-ही-अपने दिखाई देते। लेकिन अब सब रूखे बादलों की तरह थोड़े-से हवा के झोंके से अलग-अलग कट-छँट गए थे। तनिक भी अब कुछ दीखता न था। न आँख खोले, न आँख मीचे। संकट का अनंत-अथाह रेगिस्तान सारी धरती को सीने में समेटे लेटा था। और उसे पार करनेवाले थे - वे अकेले, असहाय तीन प्राणी।''[1]

इससे ज्ञात होता है कि वहाँ के लोग सिर्फ सुख के साथी है और दुख में उनको अकेला छोड़

देते हैं। लोगों की स्वार्थी भावना दर्शाने के लिए उपर्युक्त उद्धरण उपयुक्त लगता है।

ठीक इसी प्रकार सामंती समाज का वर्णन मिलता है, जैसे - [illegible]दैराम की मृत्यु के बाद उनकी पत्नी वार्षिक श्राद्ध के समय ब्रह्मभोज के लिए अपने तलाऊ खेत नाम-मात्र रूपयों में आनदेव सामंत के पास गिरवी रखती है। जोशी जी ने न केवल किसी एक पात्र के माध्यम से बल्कि सारे पात्रों या समाज से संबंधित परिस्थितियाँ, भ्रष्टाचार, अन्याय, अत्याचार, विभिन्न समस्या तथा राजनीतिक, सामाजिक, धार्मिक, आर्थिक और सांस्कृतिक रुढ़ि-परंपरा को उजागर किया है। 'अरण्य' उपन्यास में ब्राह्मण, पुरोहिताई तथा निम्न वर्गिय समाज का वर्णन मिलता है, तो 'कगार की आग' उपन्यास में लोहारों-शिल्पकारों का वर्णन मिलता है। दोनों भी उपन्यासों में 'अल्मोड़ा' के पर्वतीय अंचल पहाड़ी प्रदेश के निम्न-मध्यवर्गीय समाज का वर्णन मिलता है। इसी प्रकार जोशी जी ने समाज चित्रण को महत्त्वपूर्ण माना है।

5.2 अज्ञानी, धार्मिक, अंधविश्वासी और परंपराप्रिय समाज वर्णन -

हिमांशु जोशी जी ने अपने दो आँचलिक उपन्यासों में समाज में स्थित विभिन्न परिस्थितियों का वर्णन किया है। विभिन्न सरकारी योजनाओं से पहाड़ी प्रदेश के लोग किस प्रकार दूर रह जाते हैं तथा उन्हें शिक्षा के अभाव के कारण किन-किन समस्याओं का सामना करना पड़ता है आदि अनेक बातों का वर्णन इनमें मिलता है। शिक्षित लोग अशिक्षित लोगों के अज्ञान का किस तरह फायदा उठाते हैं और धार्मिकता के नाम पर चले व्यंग्य आडंबर को दर्शाने का प्रयास किया है। इसके साथ-साथ समाज में चलती आई रूढ़ि-परंपरा के भी अंकित किया है। 'कगार की आग' उपन्यास में एक पात्र आदमी को बीमारी की दवा लाने जानवरों के डॉक्टर के पास जाता है, यहाँ उनका अज्ञान स्पष्ट रूप से झलकता है। सिद्धनारसिंग बाबा की कृपा से बच्चा होगा, ढँगरियाँ देवता की सौंली लगने पर बिगड़ा हुआ आदमी ठीक पहले की तरह काम करेगा, झांड-फूँक के कारण आसानी से बीमारी निकल जाएगी तथा नायिका गोमती अपने देवर देवराम को खत लिखने का प्रसंग आदि अज्ञानी, धार्मिक तथा अंधविश्वासी और परंपराप्रिय समाज के प्रतिक हैं।

'अरण्य' उपन्यास में भी इस प्रकार के अनेक प्रसंगों को दिखाकर वहाँ के अंधविश्वासों का पर्दाफाश किया है। जैसे-परंपरागत विवाह पद्धति का अनुकरण, श्राद्ध के नाम पर कमाई और ईश्वर पर भरोसा रखने का दावा, माधव पधान का पूजा-पाठ, परंपरा से चलती आयी पुरोहिताई को बेटा भी सँभल

सकने की आशा, स्नान-ध्यान, शिक्षा का अभाव, शिक्षा के प्रति मानिक की अनास्था, जन्मपत्री या ज्योतिष्य देखना, कोई गलती हो तो देवी को बकरा चढ़ाने का संकल्प, किसी काम हेतु ब्रह्मदेवता के थान में माथा नवाना, गोदान, पूर्वजन्मों को मानना, सुख-दुख को भगवान की देन मानना, जमीन में गड़े धन पर भूत-पिशाच का होना तथा उसपर काले भुजंग का वास्तव्य होना, बेटी या बहन को ससुराल से मायके लाने के लिए खाली हाथ नहीं जाना, मनौतियाँ माँगना आदि अनेक बातें दिखाई देती है। उपर्युक्त बातों से जोशी जी परंपराप्रिय समाज के विरोध में जन-जागरण का काम करते दिखाई देते हैं।

5.3 विवाह प्रकारों का चित्रण :-

विवाह के अनेक प्रकार मिलते हैं, जैसे - परंपरागत विवाह पद्धति, विधवा विवाह, आंतर्जातीय विवाह, अनमेल विवाह, प्रौढ़ा अविवाहिता का विवाह, प्रेमविवाह, बहु विवाह आदि। इन प्रकारों के माध्यम से हिमांशु जोशी जी ने स्त्रियों पर होनेवाले अन्याय, अत्याचार का खुलकर वर्णन किया है। 'अरण्य' उपन्यास में परंपरागत विवाह पद्धति के अंतर्गत - कन्या का विवाह आठ और पुत्र का दस से अधिक वर्ष में करने की माधव पधान के पूर्वजों की परंपरा है। इसी परंपरा को कायम रखने के लिए माधव पधान का विवाह बाल्यकाल में होता है। उसके बाद माधव पधान के बड़े बेटे बिस्सू की शादी के बाद एक साल में ही मृत्यु होती है। उसकी पत्नी रूखलि का विवाह नहीं हो पाता तथा उनका दूसरा बेटा हरसू किसी छोटी जाति की औरत के साथ विवाह करता है। इससे यह विधवा विवाह तथा आंतर्जातीय विवाह के उदाहरण हमारे सामने स्पष्ट उभरते हैं। पंडित हिरदैराम अपनी बेटी की शादी के लिए तथा दहेज के लिए कमर कसकर काम करते हैं और पुरोहिताई की पूरी रकम इकट्ठा करते हैं। उपन्यास के दो पात्र माधव पधान और पुरुषोत्तम दो-दो विवाह कर चुके हैं। इससे बहु विवाह पद्धति दिखाई देती है। कावेरी अपने मामा के परिवार वालों को सुखी बनाने के लिए बूढ़े ठेकेदार से शादी करती है। यहाँ अनमेल विवाह दिखाई देता है। इस प्रकार विभिन्न विवाह प्रकारों का चित्रण इसमें मिलता है।

'कगार की आग' उपन्यास में भी इन प्रकारों पर ध्यान दिया है, जैसे - गोमती की माँ तथा गोमती का बाल्याकाल में विवाह होना, गोमती के पहले पति के बाद उसका दूसरा विवाह होना 'विधवा विवाह' प्रकार में आता है। खुशाल लोहार के दो विवाह होनेपर भी संतान प्राप्ति के लिए तीसरी शादी या रखैल के रूप में गोमती को रखता है। इसमें बहु विवाह पद्धति दिखाई देती है। इस प्रकार हिमांशु जोशी जी

ने अत्यंत सुंदर ढंग से, विवाह प्रकारों के माध्यम से विवाह के नामपर स्त्रियों पर होनेवाले अत्याचारों को उजागर करने का प्रयास किया है जिससे समाज व्यवस्था का पूरा चित्र हमारे सम्मुख खड़ा रहता है।

5.4 जीवन व्यापार चित्रण :-

जरूरत जीवन की जननी है। इसी कारण जिन वस्तुओं की जरूरत अति आवश्यक होती है, उन्हीं के लिए मानव कुछ भी कर सकता है। ऐसा ही एक प्रसंग 'कगार की आग' उपन्यास में देखने को मिलता है। गोमती अपने परिवार की रक्षा के लिए अपना शरीर बेच देती है। हर जगह गोमती को पैसों के लिए देह गिरवी रखना पड़ता है। वह सुंदर होने के कारण उसकी सुंदरता का अनेक लालची लोग लाभ उठाते हैं। अपने स्वाभिमान की रक्षा के लिए बीस-बीसी प्राप्ति के लिए वह पूरा एक साल लाला तिरपनलाल के साथ रहती है।

ठीक इसी प्रकार 'अरण्य' उपन्यास में कावेरी अपने मामा के परिवार वालों को सुखी रखने हेतु बूढ़े अमीर ठेकेदार से विवाह करती है। मन में न चाहकर भी उसे ऐसा करना पड़ता है। दोनों उपन्यासों के विभिन्न पात्र आर्थिक विपन्नावस्था तथा जीवन में निराशा के शिकार होने के कारण व्यसनाधिन दिखाई देते हैं। उनकी यह व्यसनाधिनता उन्हें नश्वरता की ओर ले जाती है। मानिक, पिरमा, कलिया, तेजुआ आदि इसके उदाहरण है। भुखमरी तथा पागलपन से मानिक की माँ का रात के अँधेरे में कुदली लेकर जाना इसी का उदाहरण है। ऐसे अनेक प्रसंगों से जीवन व्यापार को दर्शाया है, जिसमें जोशी जी को सफलता मिली है।

5.5 कौतूहल तथा आश्चर्य की भावनाओं का वर्णन :-

जोशी जी के दो आँचलिक उपन्यासों में कौतुहल तथा आश्चर्य की भावनाओं का वर्णन मिलता है। एक बात की पुष्टि के लिए दूसरी समर्पक बातों का चयन ठीक ढंग से किया हुआ मिलता है। जिसमें एक साथ अनेक अनर्थ घटनाएँ होना महत्त्वपूर्ण बात है। 'कगार की आग' उपन्यास में गोमती के देवर ने दी बकरी की मौत और साथ-साथ देवर देवराम का पाकिस्तान के मोर्चे पर शहीद हो जाना बड़ी आश्चर्यकारक बात लगती है। उसके क्रियाकर्म को पूरा करने के लिए गोमती को बचे-खुचे खेत गिरवी रखने पडते हैं। यहाँ एक औरत अपने देवर के क्रियाकर्म के लिए खेत गिरवी रखने की बात कौतूहल पैदा करती है। यहाँ जोशी जी ने रोजी-रोटी के बदले क्रियाकर्म को महत्त्वपूर्ण माना है। क्रियाकर्म के कुछ दिन बाद तेजुआ

उसे उसके पति के सामने अपनी रखेल बनाने के लिए घसीटकर ले जाता है। पति पिरमा चुपचाप देखता रहता है। तभी गोमती 'लघौंन' छोड़कर भाग जाती है आदि अनेक अनर्थ घटनाएँ एक साथ घटती है। जिससे आश्चर्य तथा कौतुहल की भावना हमारे मन में उमड़ आना सहज स्वाभाविक है। साथ-साथ 'अरण्य' उपन्यास में पधान की धरपकड़, मानिक की माँ की मृत्यु और कुँवरदेव शिकारी का छत पर लटककर आत्महत्या करना तथा पटवारी, पेशकार, सटवारी और थोकदार का पेड़ो की चोरी के मामलों में गाँववालों को व्यस्त करना आदि अनेक घटनाएँ एक साथ होती है। इसी कारण कौतुहल तथा आश्चर्य की भावनाओं का वर्णन उपन्यास की सफलता की दृष्टि से महत्त्वपूर्ण है।

5.6 अनेक पात्रों का चित्रण :-

आँचलिक उपन्यासों में पात्रों की भरमार होती है। कथावस्तु उनके इर्द-गिर्द घूमती रहती है। उन सभी पात्रों का अपना-अपना महत्त्व होता है। अपनी-अपनी विशिष्टता को लेकर वे पाठकों के सामने प्रस्तुत होते हैं। पात्रों के माध्यम से चरित्र चित्रण में नवीनता आई है। इसके साथ-साथ मानवीय भावनाओं का चित्रण करने के लिए पात्र उपयुक्त ठहरे हैं। पात्रों के बिना कथा प्रवाह अचल लगता है। इसी कारण हर एक पात्र की अपनी विशेषता रही है। जोशी जी ने अपने दोनों उपन्यासों में स्त्री और पुरूष पात्रों को उनकी विशिष्टता के साथ प्रकट किया है। उनका वर्गीकरण निम्न है -

<u>'अरण्य' उपन्यास के पात्र</u> -

(1) <u>स्त्री पात्र</u> - कावेरी, रूखलि, रध्धू, नीली, सुनिया, सुकिया, पं.हिरदैराम की पत्नी, पधानी, मंती, एक बुढ़िया आदि।

(2) <u>पुरुष पात्र</u> - माधव पधान,दादा, परदादा, बिस्सू, हरसू, बंशी, मानिक, हिरदैराम, पुरुषोत्तम, कुँवरदेव, आनदेव, पटवारी, पेशकार, पुलिस, दीना, गुमानी थोकदार, सटवारी, तहसीलदार, नौकर-बिसना, कृपाल आदि।

<u>'कगार की आग' उपन्यास के पात्र</u> -

(1) <u>स्त्री पात्र</u> - गोमती, गोमती की माँ, गुदलि, ककिया सास, घरी, हरलि, सुदलि, खुशाल की दो

पत्नियाँ, परलि और दुरलि।

(2) <u>पुरुष पात्र</u> - पिरमा, कलिया, तेजुआ, कन्नु, धरमराम, चौकीदार पतरौल, घोड़िया डॉक्टर, हरकिसन पधान, खिमुराम, लालू हलवाई, हरपतिया, पटवारी, प्रेमराम, हरराम, रमियाँ, किशनसिंह थोकदार, खिलानंद, करमराम, कुँवरसिंह, पेशकार, सुंदर, देवराम, गुमानसिंह, खुशाल, नंदलाल सुतार, केशवराम, बुधानंद पण्डत, चिंता, बैनिराम और लाला तिरपनलाल आदि।

जोशी जी ने 'अरण्य' उपन्यास में माधव पधान की पाँच पुत्रियाँ हैं ऐसा उल्लेख किया है लेकिन उसमें केवल तीन पुत्रियों के ही नाम मिलते हैं। इन दो उपन्यासों में निरपराधी तथा मानवतावादी, नायक, खलनायक, मजदूरी करनेवाले पात्र, मनोवैज्ञानिक धरातल पर चित्रित परिवर्तित मनस्थिति के पात्र, चरित्र चित्रण में वास्तविकता, सामाजिक कुप्रथाओं के विरोध में विद्रोह करनेवाले पात्र, प्यार तथा वात्सल्य जतन करनेवाले पात्र, स्त्री-स्त्री का द्वेष करनेवाले पात्र, स्वार्थी पात्र, नामर्दानगी के पात्र, विशिष्ट जाति के पात्र तथा व्यसनाधिन पात्रों का उल्लेख मिलता हैं।

इसके साथ-साथ भारतीय संस्कृति का जतन करनेवाले दो प्रमुख स्त्री पात्र है - कावेरी और गोमती। इन दो स्त्री पात्रों के माध्यम से उन्होंने त्यागी, कामकाजी, संवेदनशील, करूणामयी, पति परमेश्वर माननेवाली, श्रद्धालु, माँ की वत्सलता, धार्मिक विधि को माननेवाली, क्रियाकर्म पूरा करनेवाली, भवानी का रूप धारण करनेवाली तथा स्वाभिमानी स्त्री को दर्शाया है। इस प्रकार अनेक पात्रों के होते हुए भी विभिन्न विभागों में विभाजन होने के कारण उनका अपना महत्त्व स्पष्ट झलकता है। विभिन्न पात्रों के जरिए पर्वतीय अंचल का स्पष्ट रूप से चित्रण करने में जोशी जी सफल हुए हैं।

5.7 सामाजिक कुप्रथाओं के विरूद्ध विद्रोह करनेवाले पात्रों का चित्रण :-

मुसीबतों का सामना डटकर कर समाज में होनेवाली अनेक कुप्रथाओं का विरोध विभिन्न पात्रों के जरिए दिखाने का प्रयत्न जोशी जी ने किया है। 'अरण्य' उपन्यास की कावेरी मामा के यहाँ रहकर भुखमरी समस्या से ग्रस्त है लेकिन अंत में वह उसी घर के सुख हेतु बूढ़े अमीर ठेकेदार से शादी करती है। इसके साथ-साथ मानिक को गाँजा, शराब, अत्तर-शुल्फई, बीड़ी आदि व्यसनों से मुक्त करने का प्रयत्न करती है। मानिक अपने घर की स्थिति को देखकर पलटन में भरती हो जाता है। सभी पात्र जीवन जीने के लिए तड़प रहे

हैं और आड़े मे आई सारी समस्याओं का सामना करते हैं। माधव पधान का द्विवतीय सुपुत्र 'हरसू' किसी छोटी जाति की औरत के साथ शादी करता है और गाँव छोड़कर उसी के साथ भाग जाता है। यह उसने परंपरागत विवाह पद्धति के विरोध में उठाया क्रांतिकारी कदम विद्रोह का उदाहरण है। 'कगार की आग' उपन्यास में गोमती सभी समस्याओं का डटकर सामना करती है। अपने पर होनेवाले अत्याचार का विरोध करती है। देवराम अपने ककिया कलिया से बदला लेना चाहता है तथा उसे गोली से उड़ा देने की और अपनी ओर से सरकार में रिपोर्ट लिखवाने की धमकी देता है। 'खिमुराम ऐसा ही एक पात्र है, जो पूरे उपन्यास में विद्रोही पात्र लगता है। खिमुराम हर अन्याय, अत्याचार का विरोध करता है। पिरमा को जब कलिया तथा तेजुआ मारते हैं तो उसका सत्य उद्घाटन वह खुद करता है। आदि अनेक सामाजिक कुप्रथाओं का विरोध करनेवाले पात्रों के माध्यम से सामाजिक खोखलेपन, अन्याय, अत्याचार, राजनीतिक काली करतूतें दिखाने में जोशी जी सफल हुए है।

5.8 पात्रों की परिवर्तित मनस्थिति का वर्णन :-

इस स्थिति का वर्णन मनोवैज्ञानिक धरातल पर आता है। जोशी जी ने अंचल की सभी बातों का बारिकी से अंतर्बाह्य सूक्ष्म अध्ययन किया है। 'अरण्य' उपन्यास में गुनाह न करने पर भी इज्जत तथा परिवार के लिए पीड़ित माधव पधान झूठी गवाह देना पसंद करते हैं। वे उससे अपने परिवार वालों को बचाना चाहते हैं। ठीक इसी प्रकार 'कगार की आग' उपन्यास में पिरमा मार पीट के भय से गुनाह कबूल करता है। देवराम अपने चचेरे कलिय'का से बदला लेना चाहता है लेकिन इज्जत के कारण तथा चाचा पिता के समान होने की भावना से वह रूक जाता है। तेजुआ गोमती को मिटाना चाहता था लेकिन उसके सौंदर्य को देख उसे अपनी रखैल बनाना चाहता है। खुशाल के घर गोमती सुख-चैन से होने पर भी दूध भरे ग्लास को देख उसे अपने बेटे कन्नु की याद सताती है। गोमती का 'बीस-बीसी' के लिए लाला तिरपनलाल के यहाँ वापस आना, आत्महत्या के विचार किसी की याद आनेपर बदलना, लोकलाज के भय से झूठी गवाह देना आदि अनेक घटनाएँ 'कगार की आग' उपन्यास में मिलती है। साथ ही साथ 'अरण्य' उपन्यास की कावेरी का बूढ़े ठेकेदार से न चाहकर भी विवाह होना, मनिक का गाँव में न रहकर शहरों में रहना, तथा पंडित माधव पधान के बेटे हरसू का किसी छोटी जाति की औरत के साथ भागकर विवाह करना आदि अनेक बातों से पात्रों की परिवर्तित मनस्थिति का वर्णन हमें दोनों उपन्यासों में मिलता है। जिससे दोनों उपन्यास सफलता की सीढ़ियाँ

पार कर चुके हैं।

5.9 विविध समस्याओं का चित्रण :-

हर युग बदलता है लेकिन समस्याएँ वहीं की वही रहती है। अगर हर युग में समस्याओं का हल होता गया तो नए युग में समस्याएँ ही नहीं रहेगी। इसकी सिर्फ कल्पना की जा सकती है। 'अरण्य' और 'कगार की आग' उपन्यासों में जोशी जी ने पहाड़ी अंचल के समाज में उत्पन्न समस्याओं को स्पष्ट किया हैं। इन समस्याओं से समाज का पूरा ब्योरा हमारे सम्मुख प्रस्तुत होता है। 'अरण्य' और 'कगार की आग' उपन्यासों में प्राय: आर्थिक, स्त्रियों पर होनेवाले अन्याय, अत्याचार, पति की नामर्दानगी, पीड़ित स्त्री, घृणा, आर्थिक विसंगति, स्त्री-स्त्री का द्वेषभाव ,बालविवाह, विधवा विवाह, तथा शैक्षणिक समस्या, मकान समस्या, बेरोजगारी समस्या, भुखमरी समस्या, अशिक्षा अज्ञान की समस्या, अनमेल विवाह, विवश नारी, परिवार विघटन की समस्या, अकाल समस्या, भ्रष्टाचार समस्या आदि समस्याओं को प्रस्तुत किया है। कुछ उदाहरण निम्न है -

(1) <u>आर्थिक समस्या</u> -

इस समस्या के अंतर्गत बेकारी, मजदूरी, भुखमरी आदि समस्याएँ आती है। सरकारी रकम-कलम पूरी करने के लिए पं.हिरदैराम की पत्नी अपनी बेटी की चाँदी की सुतली बेचना पसंद करती है - जैसे -
-

''सुक्की के गले पर बाप की बनाई कभी की नन्हीं सुतली - चांदी की झुमकेवाली डोरी टंगी थी। जब किनारा कहीं दीख... ...हीं तो उसकी बूढ़ी काँपती अंगुलियों ने उसे ही उतार लिया। उसी को भली-भाँति पत्ते में लपेटकर, कपड़े में बांधकर रकम चुकाने के लिए भेज दिया।''[2]

जोशी जी ने यहाँ आर्थिक स्थिति को स्पष्ट रूप से दर्शाने का प्रयास किया है।

(2) <u>विधवा विवाह समस्या</u> -

''दो-तीन साल की थी कि बाप गुजर गया। बारह-तेरह की कच्ची उमर में विधवा हो गई।

दूसरा विवाह किया तो ये हाल। किसी दिन फाँसी लगाकर आत्मघात कर लेगी।''[3]

विवाह की विभिन्न समस्याओं में से एक उपर्युक्त समस्या है जिसमें बालविवाह तथा विधवा विवाह की समस्या को दिखाने का प्रयास किया है। किसी बाल विधवा का दूसरा विवाह होने पर भी उसे विधवा का ही जीवन कैसे बीताना पड़ता है इसका वर्णन जोशी जी ने किया है।

(3) <u>मकान समस्या</u> -

कोई भी व्यक्ति रोटी, कपड़ा और मकान के बिना जीवित नहीं रह सकता। ये तीनों अत्यावश्यक मुलभूत चीजें हैं। हिमाचल पर्वतीय अंचल के 'लधौंन' गाँव में स्थित लोगों को रहने के लिए अच्छे घर भी नहीं हैं। इसका वर्णन करते समय जोशी जी लिखते हैं -

''तमाम झीनी झोंपड़ी पानी से भीग गई। दीवारें मिट्टी से लिपी-पुती न थीं। इसीलिए पानी की बौछारें बेरोक-टोक भीतर आ रही थी।''[4]

इससे वहाँ की मकान समस्या का चित्रण हू-ब-हू लगता है।

(4) <u>पति की नामर्दानगी की समस्या</u> -

जब गोमती को तेजुआ अपने घर अपनी रखैल बनाने हेतु पिरमा के सामने घसीटकर ले जाता है तो वह सिर्फ देखता रहता है। उसका प्रतिकार नहीं कर सकता। जोशी जी उसकी नामर्दानगी को दर्शाते हुए कहते हैं -

''पति के सामने तेजुआ उसे घसीटकर ले गया, पर वह देखता रहा - पत्थर! ऐसे हुमने - जैसे मुरदा पति के साथ सारी जिंदगी कैसे कटेगी ? उसके सामने ही तेजुआ रोज़ बलात्कार करता रहेगा।''[5]

अत: प्रतिकार की शक्ति होने पर भी मारपीट तथा अनेक पारिवारिक समस्याओं के भय से चूप रहना कितना असंगत है इसे दर्शाने में लेखक सफल हुए हैं।

(5) <u>भुखमरी की समस्या</u> -

आर्थिक विपन्नावस्था के कारण ये समस्या जन्म लेती है। अर्थप्राप्ति हेतु उपन्यासों के पात्र एक जगह से दूसरी जगह काम करने के लिए स्थलांतर करते दिखाए हैं। जोशी जी लिखते हैं -

''अधिकांश लोग घाम तापने, पेट भरने के लिए तराई के मैदानों की तरफ उतर गए थे - गाय-बछड़े, माल-असबाब सब लादकर। यही तो एकमात्र उपाय था जो भयंकर शीत और भुखमरी से त्राण देता। थकी जिंदगी को गति देता। सहारा देता।''[6]

उपर्युक्त समस्याओं के बावजूद और अनेक समस्याएँ इन उपन्यासों में मिलती है लेकिन उनका हल बताने में जोशी जी असफल रहे हैं।

5.10 शोषण, अत्याचार एवं राजनीतिकतापर सूक्ष्म दृष्टि :-

जोशी जी ने दोनों पहाड़ी अंचल के राजनीतिक, सामाजिक, तथा आर्थिक समस्याओं के माध्यम से शोषण, अत्याचार एवं राजनीतिकता पर सूक्ष्म दृष्टि डालकर उसे स्पष्ट किया है। आर्थिक विपन्नावस्था के कारण भुखमरी,मजदूरी, अन्याय आदि समस्याएँ निर्माण होती है। समाज में स्थित उच्च वर्ग मनमानी से अत्याचार करते हैं। किसी-न-किसी कारण को लेकर पीड़ितों का जीना हराम किया जाता है। स्वातंत्र्योत्तर काल में उन्नति की अपेक्षा अधोगति का मार्ग अपनाने वालों की संख्या अधिक रही है। इसी कारण स्वातंत्र्योत्तर काल में स्वार्थ, भ्रष्टाचार, भ्रष्ट अफ़सर, नेता आदि के कारण समस्या तथा शोषण का सिलसिला जारी रहा। कुछ लोग असुरी वृत्ति को उपयोग में लाने लगे। सरकार तथा पुलिसों द्वारा ग्रामांचल के लोगों को रिश्वत हेतु किस प्रकार लूटा जाता था इसका हू-ब-हू वर्णन जोशी जी ने अपने दोनों उपन्यासों में किया है। पटवारी, पेशकार, सटवारी तथा तहसीलदार गुनाह खुद करते हैं और उसका इल्जाम पीड़ित शोषितों के माथे टिकाते हैं। 'कगार की आग' उपन्यास में तेजुआ नाली का पानी गोमती के घर छोड़कर उसे गिराना चाहता है, लेकिन गोमती के पति को मारना, बकरी को जहर देना, चोरी का इल्जाम लगाना तथा वासना की आग में जलकर असुर प्रवृत्ति से अत्याचार करना आदि अनेक घटनाओं को जोशी जी ने दर्शाया है। जोशी जी का बचपन इसी पहाड़ी अंचल में बीतने के कारण उन्होंने इसका यथार्थ चित्रण किया है।

'अरण्य' उपन्यास में भी उक्त समस्याओं के बावजूद चोरी का इल्जाम, स्वार्थ, भ्रष्टाचार, शोषण, अन्याय, अमानवीय अत्याचार, राजनीतिक तथा सरकारी अफ़सरों का ढकोसला आदि बातों को

लेकर वहाँ की राजनीतिक स्थिति का सूक्ष्म दृष्टि से अध्ययन जोशी जी ने किया है। बाहरी बातों के साथ-साथ आंतरिक बातों को दर्शाना उनकी खाँसियत रही है। इन दो उपन्यासों के माध्यम से जोशी जी का स्त्रियोंपर होनेवाले अन्याय, अत्याचार को दर्शाने का अधिक मात्रा में प्रयास रहा है। इसमें राजनीतिक षड्यंत्र तथा सामाजिक पाखंडो पर ताना मारा है। सरकारी योजनाएँ गरीब को न मिलकर सरकारी अफ़सर उसे बीच में ही कैसे गायब करते हैं इसपर कड़ी नजर जोशी जी ने रखी है। पारिवारिक संघर्ष, नेता, अफ़सरों की गंदी मनोवृत्ति को भी दर्शाया है। स्त्री को केवल भोगवस्तु मानकर तथा बच्चे पैदा करनेवाला बेजान यंत्र मानकर उनपर होनेवाले शारीरिक तथा मानसिक अत्याचार उपन्यासों में स्पष्ट झलकते हैं। पीड़ितों के जन्म से लेकर उसके अंत तक जो भी घटनाएँ होती रहती है उनका पूरा-का-पूरा विवेचन सूक्ष्म दृष्टि से किया है। लेकिन राजनीतिक स्थिति के सीमित विवेचन से दोनों उपन्यासों में कमी दिखाई देती है।

5.11 वर्णन शैली -

औचित्य संप्रदाय के प्रवर्तक आ.क्षेमेंद्र के अनुसार -

''उचितं प्राहुराचार्याः सदृशं किल यस्य तत् ।

उचितस्य च यो भावः तदौचित्यं प्रचक्षते।।''[7]

उनका कहना है कि जिसका जहाँ होना चाहिए उसका वहीं होना उचित है। इसी कारण किसी एक बात को बार-बार कहना उचित नहीं है। ठीक इसी प्रकार उपन्यासों में जहाँ विस्तारित वर्णन आवश्यक है वहाँ उसका होना उचित है। अगर वर्णन पर बंधन नहीं होता तो वह मुक्तछंद गद्य कहलाकर उपन्यास के बदले वर्णनात्मक निबंध कहे जाते। इसी कारण उपन्यासों में आवश्यक विस्तार वर्णन होना महत्त्वपूर्ण है। जोशी जी ने 'अरण्य' उपन्यास में एक जगह एक ही बात को घूमा-फिराकर कहा है, जैसे -

''माधव पधान को साढ़े तीन बरस, पूरे साढ़े तीन बरस - तीन साल छह महीने यानी कि बयालीस माह की कठोर सजा हो गई।''[8]

यह वर्णन उपन्यास की दृष्टि से गलत न लगकर कथा प्रवाह को पुष्टि देता है। उपन्यासों में वर्णित विभिन्न घटना तथा उनका मेल सार्थक लगता है। विभिन्न आँचलिक घटनाओं का वर्णन पढ़ने के लिए

उत्सुकता बढ़ाता है। आँचलिक उपन्यास तत्त्वों के आधारपर घटनाओं को एक साँचे में बिठाना आवश्यक होता है जो कार्य हिमांशु जोशी जी ने सफलता-पूर्वक किया है। इनमें प्रकृति का मानवीकारण तथा काव्यात्मक वर्णन भी मिलता है। आँचलिक उपन्यासों में पात्रों की भरमार होती है। इसी को लेकर इन दो उपन्यासों में पात्रों की संख्या अधिक है। लेकिन मूल कथा हर पात्र के इर्द-गिर्द घूमती है। इसके साथ-साथ कथानक में वास्तविकता लाने के लिए संक्षिप्त संवादों का भी प्रयोग मिलता है। हथौड़े की घनाघन, खि:खि: हँसना, कर्र-कर्र, बद्-बद्, घर्र-घर्र, प्राणियों की आवाजें तथा छोटे संवादोंवाली साहुकारी भाषा आदि को भी दर्शाया है। उपन्यासों में हू-ब-हू वर्णन पर अधिक जोर दिया है। कथाप्रवाह में मूलकथा से उपकथा जुड़ी रही है। मूलकथा गोमती / कावेरी का संघर्ष, पहाड़ी जनजीवन की कथा-व्यथा होकर भी इसमें उपकथाओं का समावेश मिलता है। इसी कारण उपकथाएँ मूल कथा से संबंधित लगती है। इनमें राजनीतिक, सामाजिक, धार्मिक, आर्थिक स्थितियों के साथ-साथ सांस्कृतिक उत्सव, त्यौहार, मेले, लोकगीत आदिओं का वर्णन मिलता है। अश्लील वर्णन एक दो जगहों पर मिलता है, लेकिन कम मात्रा में। इस प्रकार जोशी जी वर्णन की दृष्टि से आवश्यक बातों पर जोर देकर मूल कथा में बाधा न बननेवाली उपकथाओं को भी बड़ी कुशलता से समेटते हैं। वर्णन शैली की दृष्टि से ये उपन्यास सफल दिखाई देते हैं।

5.12 संस्कृति तथा सौंदर्यात्मक दृष्टि :-

संस्कृति प्रधान होती है। रूढ़ि परंपराओं का पालन संस्कृति में आता है। विभिन्न देवी-देवताओं की पूजा संस्कृति का एक अंग है। प्रमाणबद्ध सौंदर्य तथा संस्कृति का वर्णन जोशी जी के दोनों आँचलिक उपन्यासों में मिलता है। संस्कृति में त्यौहार, पर्व, उत्सव, मेले आदि का समावेश होता है। सौंदर्यात्मक वर्णन में सुसंगति तथा स्वरूपता मिलती है। नैतिक तथा अनैतिक संबंधों का कुशलतापूर्वक चित्रण मिलता है। 'अरण्य' और 'कगार की आग' उपन्यासों में उन्होंने देवधूरा, ब्यानधूरा, गजार देवता आदि मेलों का वर्णन किया है। किसी अन्य पुरुष की तरफ बार-बार देखना संस्कृति के खिलाफ है, इसे स्त्री पात्र रूखलि के माध्यम से स्पष्ट किया है। इसके साथ-साथ सिरी-पंचमी के त्यौहार का सफलतापूर्वक चित्रण मिलता है। बहन या बेटी को ससुराल से मायके लाते समय खाली हाथ न जाने की संस्कृति का पालन उपन्यास का एक पात्र बंशी करता है। देवधूरे के मेले में लोग सह-नृत्य करते हैं। 'छन्-छनाछन हो ई हो ई हो ई हो' को गाते हैं। स्वर-में-स्वर, हाथों में हाथ, बाहें फैलाकर विभोर होकर नाचते हैं। इनके साथ-साथ रंगीले

मर्द और औरतें 'ओ इ ! तीले धारो बोला बचू' जैसा बैरा गाते हैं। इसप्रकार उत्सव-पर्व-त्यौहार का वर्णन इसमें मिलता है।

सौंदर्यात्मक दृष्टि को देखे तो उन्होंने प्रकृति का मानवीकरण, विभिन्न पात्रों का चित्रण तथा प्रकृति का काव्यात्मक चित्रण किया है। सौंदर्य बढ़ाने के लिए उपमा अलंकार का भी उपयोग किया है। इनके उदाहरण निम्न प्रकार से -

(1) <u>प्रकृति का मानवीकरण</u> -

''कोरे आकाश से वज्र बरस पड़ा।''[9]

इससे संकटों का सामना कितनी कठोरता से करना पड़ता है तथा सुख में साथ देनेवाले दुख में कैसे छोड़ जाते हैं और टूटा-फूटा सहारा भी ईश्वर कैसे छीन लेता है आदि बातों को स्पष्ट रूप से दिखाने के लिए जोशी जी से प्रकृति का मानवीकरण करना उचित लगता है।

(2) <u>पात्रों का चरित्र-चित्रण</u> -

''अंधकार में उसके ककिया ससुर-कलिय'का का डरावना चेहरा घूमने लगा। शराबियों की जैसी बड़ी-बड़ी लाल आँखे ! घनी मूँछे !''[10]

''साँवली होने के बावजूद उसमें अद्भुत रूप था, अनोखी जवानी! जो देखता, देखता ही रह जाता।''[11]

उपन्यासों में चित्रित पात्रों के रूपवर्णन से उनके चरित्र उजागर के लिए सहायता मिली है। इसी कारण कलिय'का तथा गोमती की माँ के चरित्र को उजागर करने के लिए उपर्युक्त वाक्यों को प्रयोग में लाया है।

(3) <u>काव्यात्मक पंक्ति</u> -

''समय पाँवों पर पंख बाँधे उड़ता रहा ! उड़ता रहा। दिन, महीने, बरस ! बरस पर

बरस!''[12]

(4) उपमा अलंकार -

''कुँवरदेव के प्राण मछली की तरह छटपटाने लगे।''[13]

भाषा को प्रौढ बनाने के लिए जोशी जी ने अलंकार तथा काव्यात्मक पंक्तियों का सहारा लिया है। इससे ज्ञात होता है कि लेखक ने उपन्यास की सफलता के लिए उपर्युक्त बातों को उपयोग में लाया है।

5.13 छोटे-छोटे संवाद तथा स्थानीय कहावतें, मुहावरें, लोकोक्ति, और गालियों का प्रयोग :-

कथानक के निबंधवत् रूप का तथा वर्णनात्मकता का खंडन संवाद करते हैं। संवाद अगर छोट-छोटे हो तो उनसे वास्तविकता की झलक स्पष्ट देखने मिलती है। इसीकारण जोशी जी ने पहाड़ी अंचल का वर्णन हू-ब-हू करने के लिए उपन्यासों में संक्षिप्त संवादों को दर्शाया है, जैसे - 'अरण्य' उपन्यास की रूखलि कावेरी को मेले जाने हेतु अपने पास बुलाती है और कहती है कि -

'' 'मेले नहीं जाओगी ?'

'ना'

'क्यों'

'तबीयत ठीक नहीं' [14]

ठीक इसी प्रकार 'कगार की आग' उपन्यास की नायिका गोमती जब वापस घर लौटकर आती है तो अपने बेटे कन्नु से पूछती है -

''कल खाना नहीं बनाया उन्होंने ?''

"न्ना।"

"आज भी नहीं –"

"तो तूने क्या खाया ?"

"हरलि'दी ने एक तुमड़िया – ककड़ी दी थी।"

"बस्स, दो दिन से उसी पर है रे...!"[15]

उपर्युक्त छोटे-छोटे संवादों के कारण भाषा की रोचकता को बढ़ाने का प्रयास तथा वर्णनात्मकता का खण्डन किया है। इन संवादों के साथ-साथ स्थानीय मुहावरें, कहावतें, लोकोक्ति तथा गालियों का भी प्रयोग किया है, जैसे -

(1) कहावतें -

एक कौवे के नौ कौवे बनाना, जितने मुँह-उतनी बातें, इधर गऊ-उधर गंगा, इधर कुआँ-उधर खाँई आदि।

(2) मुहावरें -

पैचा माँगना, हाड़-ही-हाड़ रहना, खून का घूँट पीना, खून पी जाना, जौ हाथ करना, पसीना-पसीना होना, रोंगटे खड़े हो जाना, खून-पसीना एक करना, नौ-दो-ग्यारह होना और 'अरण्य' उपन्यास में बार-बार मिलनेवाला - किनारा कर जाना आदि।

(3) लोकोक्तियाँ -

नौ घर का जूठन खाना, सोने की नाक गोबर से लिप देना, एक चोरी - उसपर सीनाजोरी, ना घर का ना घाट का, उल्टा चोर कोतवाल डाँटे, आदि।

(4) गालियाँ -

जारजात, जानिजौमि रौंड, नंगी-नौहाल, रण्डी, साला, ए-बैच्चा, बेशरम, डाकिन, हरामजादी, कुतिया की बच्ची, कमीने, बदजात, बदफेल, कमजात, आदि।

5.14 स्थानीय बोली का प्रयोग :-

हिमांशु जोशी जी का बचपन पहाड़ी अंचल में बीतने के कारण वहाँ की बोलचाल की भाषा से पूर्णरूप से परिचित हैं। उन्होंने 'अरण्य' और 'कगार की आग' उपन्यासों में स्थानीय बोली के शब्दों का चयन सुंदर ढंग से किया है। भाषा ही वह माध्यम होती है, जो उस प्रदेश की महिमा बताती है। भाषा के जरिए ही आदमी आदमी से मिलने पर खुलकर बातें करता है। उन्होंने प्रयुक्त किए किसी भी शब्द से या वाक्य से दुर्बोधता नहीं मिलती। उपन्यास का कथाप्रवाह उचित भाषा से ही अच्छा लगता है। भाषा के कारण कथानक के उद्घाटन में नवीन प्रतिति आयी है। इसी कारण हिमांशु जोशी जी ने अरबी-फारसी, अपभ्रंश, ब्रज आदि किसी भाषा के शब्दों का प्रयोग न कर केवल स्थानीय बोली भाषा का प्रयोग दोनों उपन्यासों में किया है। इसमें अलग-अलग प्रकार के शब्द मिलते हैं। (1) बोलचाल के आँचलिक शब्द ,(2) 'कर' प्रत्यय लगाकर आये शब्द , (3) द्विरूक्ति के शब्द , (4) जुड़े शब्द आदि। दोनों उपन्यासों में कुछ शब्दों में समानता मिलती है। उपर्युक्त शब्द प्रकारों के उदाहरण निम्न है -

(1) <u>बोलचाल के आँचलिक शब्द</u> -

इजा, काने, राकसों, ककिया, मशान, निरलज्ज, बामन, आतमा, सरग, लच्छन, हौलात, बाज्यू, सत्यानास, मरद, न्या, कुगत, परान, दरिद्दर, जनमता, चा, कुसल, सिरी, हौर, झेल, बुबु, भौत, बखत, सुन्ते, नुकशान, डाकटर, सौकारपन, कारज, कर्ले, फैदा, लछमी, रूपै, जमदूत, इत्ता, ठैर, भरस्ट, सखत, बौपार, मऊज, हिंया, पैले, दुन्या, रई, किरिया, बनोबस्त, जिकर, सुभाव, वैसाख, छनचर, चिठ्ठीरसैन आदि।

(2) <u>'कर' प्रत्यय लगाकर आये शब्द</u> -

बेच-बेचकर, खेल-खेलकर, पी-पीकर, लगा-लगाकर, टटोल-टटोलकर, फूट-फूटकर, फेंक-फेंककर, फड़-फड़ाकर, उठा-उठाकर, चिल्ला-चिल्लाकर, घिर-घिरकर, रह-रहकर, खोद-खोदकर,

भर-भरकर, रूक-रूककर, इठला-इठलाकर, छक-छककर, छिप-छिपकर, बच-बचकर, नोच-नोचकर, लिपट-लिपटकर आदि।

(3) द्विरूक्ति के शब्द -

हलका-हलका, कुछ-कुछ, छोटी-छोटी, तिनका-तिनका, जगह-जगह, तरह-तरह, बड़ी-बड़ी, आते-आते, थुर-थुर, पटर-पटर, सहमते-सहमते, सच-सच, लौटते-लौटते, साथ-साथ, कौन-कौन, कहाँ-कहाँ, अंग-अंग, एक-एक, अभी-अभी, पीछे-पीछे, पाई-पाई, टुकड़े-टुकड़े, नीले-नीले, जल्दी-जल्दी आदि।

(4) जुड़े-शब्द -

रूखा-सूखा, जूठा-पीठा, टूटी-फूटी, दनकता-फनकता, इक्की-दुक्की, पूछ-ताछ, ऊबड़-खाबड़, कागज-पत्तर, पढ़े-लिखे, चिट्‌ठी-पतरी, बोल-चाल, धरम-करम, इलाज-विलाज, मिठाई-सिठाई, काम-काज, दवाई-पताई, भाँडे-बरतन, कपड़े-लत्ते, रहा-सहा, पास-पड़ोस, दुबले-पतले, तीरथ-बरत, नामी-धामी, टेढ़े-मेढ़े, चहल-पहल, लोग-बाग, जाँच-आँच, नपा-तुला आदि।

'अरण्य' उपन्यास में जोशी जी ने और एक ढ़ंग से शब्दचयन किया है, जैसे - चिलम-पर-चिलम, कम-से-कम, सारी-की-सारी, बातों-ही-बातों, गाँव-का-गाँव, कभी-न-कभी, खुली-की-खुली, पुश्त-दर-पुश्त, मन-ही-मन, अंदर-ही-अंदर आदि। इससे यह स्पष्ट होता है कि जोशी जी स्थानीय बोली का प्रयोग करने में पूर्णरूप से सफल हुए है।

5.18 'अरण्य' और 'कगार की आग' उपन्यासों में समानताएँ और विशेषताएँ :-

हिमांशु जोशी के दोनों आँचलिक उपन्यासों की शुरुआत पहाड़ी अंचल वर्णन से होती है।इन दो उपन्यासों में हिमाचल प्रदेश के अल्मोड़ा जिले के आस-पास के दो आँचलिक प्रदेश 'लधौन' और 'कनाली' का वर्णन मिलता है। दोनों भी उपन्यासो में उन गाँव के पास नदी होने का आशय है। 'अरण्य' उपन्यास में 'शारदा' नदी और 'कगार की आग' उपन्यास में 'ज्योस्यूड़ा' नदी का उल्लेख है। दोनों उपन्यास नायिका प्रधान है। दोनों उपन्यासों की नायिकाएँ उदास और आर्थिक विपन्नावस्था से पीड़ित है। पात्रों

के नाम में भी समानता मिलती है, जैसे-पधान, पधानी, सिपाही, पटवारी, पेशकार आदि। इसके साथ-साथ पहाड़ी अंचल के कुर्मांचल का वर्णन दोनों में भी मिलता है। जैसे - लुहार-शिल्पकार और ब्राह्मण-पुरोहिताई और अनेक बातों में समानता मिलती है - स्त्री-स्त्री में द्वेषभावना का वर्णन, सामंतवादी समाज दर्शन, स्वातंत्र्योत्तर स्थिति का वर्णन, स्थान विशेष की दृष्टि से 'आबाद डाँडा' और 'नरसिंह डाँडा', लोहाघाट की हवालात का वर्णन तथा इजा, बोज्यू, परमेसर, दुल'दा, झेल, थोकदार, दद्दा, कक्का आदि अनेक शब्दों में समानता मिलती है। दोनों उपन्यासों के पात्रों का संबंध मिला-जुला लगता है। उनमें इतनी समानता मिलती है कि पात्रों के सिर्फ नाम बदले है ऐसा लगता है, जैसे -

(1) खलनायक के रूप में -

अरण्य - पुरुषोत्तम और उसका बेटा दीना।

कगार की आग - कलिया और उसका बेटा तेजुआ।

(2) नायिका के रूप में -

अरण्य - कावेरी।

कगार की आग - गोमती।

(3) सच्चाई का साथ देनेवाले पात्र -

अरण्य - माधव पधान।

कगार की आग - खिमुराम।

(4) सामाजिक कुप्रथाओं के विरूद्ध विद्रोह करनेवाले पात्र -

अरण्य - मानिक, कावेरी, माधव पधान।

कगार की आग - पिरमा, गोमती, खिमुराम ।

(5) संतान के लिए बहुविवाह करनेवाले पात्र -

अरण्य - ठेकेदार।

कगार की आग - खुशाल।

(6) वृक्षों के नामों में समानता -

खुबानी, देवदार, नासपती वृक्ष आदि।

दोनों उपन्यासों के पात्र अपनी उपजीविका चलाने के लिए काम करने 'तराई-भाभर' नामक प्रदेश में जाते हैं। गाँजा, अत्तर, शराब, कच्ची और शुल्फई जैसी व्यसनाधीनता में दोनों उपन्यासों के पात्र सम्मिलित हैं। पात्र की बाल्य उमर दिखाने के लिए एक ही वाक्य प्रयोग किया है, जैसे - ''उसके दूध के दाँत अभी भी टूटे न थे।'' पात्रों की संख्या में भिन्नता मिलती है। 'अरण्य' उपन्यास से 'कगार की आग' उपन्यास में पात्रों की संख्या अधिक है। उनमें भी दोनों उपन्यासों में स्त्री पात्रों की संख्या से पुरुष पात्रों की संख्या ज्यादा है। त्यौहार, पर्व, उत्सव, मेले में अंतर दिखाई देता है, साथ-साथ पात्रों के पेहराव में भी अंतर मिलता है। राजनीतिक, सामाजिक, धार्मिक, आर्थिक, सांस्कृतिक परिस्थितियाँ तथा समस्याएँ भी अलग-अलग मिलती है। 'रात के अँधेरे में कोई विक्षिप्त और औरत सी आकृति खेतों पर काम करती दिखने का वर्णन दोनों उपन्यासों में समान है। पात्रों की आयु और अनुभवों को दर्शाने के लिए एक ही उदाहरण मिलता है - ''उन्होंने दुनिया देखी है। धूप में यों ही बाल सूककर सन की तरह सफेद न हुए थे।''[16/17]

'अरण्य' उपन्यास की पधानी का बेटा बंशी अपने चचेरे कक्का पुरूषोत्तम की गाय-बकरियाँ पालता है। ठीक इसी तरह 'कगार की आग' उपन्यास की गोमती का बेटा कत्तु अपने चचेरे कक्का कलिया की गाय-बकरियाँ पालता है। इससे यह स्पष्ट होता है कि दोनों प्रदेश के लोग उपजीविका के लिए गाय-बकरियाँ पालते हैं। उपर्युक्त सारी विशेषताओं का वर्णन दोनों उपन्यासों में मिलता है।

उपन्यासों की बाह्यरूप से समानताएँ तथा विशेषताएँ देखे तो - 'अरण्य' उपन्यास आकार, पृष्ठसंख्या तथा अध्यायों की संख्या में 'कगार की आग' उपन्यास से बड़ा है। 'अरण्य' उपन्यास में

कुल मिलाकर 120 पन्ने और 34 अध्याय हैं तो 'कगार की आग' उपन्यास में कुल-मिलाकर 106 पन्नें और 20 अध्याय हैं। दोनों उपन्यासों के मुखपृष्ठ पर एक असहाय नारी का चित्र दिखाया है और उनके मुखपृष्ठ के आवरण सत्यसेवक मुखर्जी नामक आदमी ने बनाए हैं। दोनों उपन्यासों के आरंभ में जोशी जी ने अपनी भूमिका लिखी हैं। 'अरण्य' उपन्यास का प्रकाशन 'किताबघर' प्रकाशन ने सन 1965 ई.में किया है तो 'कगार की आग' उपन्यास का प्रकाशन 'भारतीय ज्ञानपीठ' प्रकाशन ने सन 1976 ई.में किया है। इससे यह मालूम होता है कि 'अरण्य' उपन्यास के ग्यारह वर्ष बाद 'कगार की आग' उपन्यास का निर्माण हुआ है। 'अरण्य' उपन्यास का मूल्य 50/- रू. तो 'कगार की आग' उपन्यास का मूल्य 45/- रूपए हैं। दोनों उपन्यासों के अंतिम पृष्ठ पर जोशी जी की तसवीर के साथ-साथ उनका साहित्य परिचय मिलता है, आदि अनेक बातों में समानताएँ और विशेषताएँ मिलती हैं।

निष्कर्ष :-

हिमांशु जोशी जी के दो आँचलिक उपन्यास है - 'अरण्य' और 'कगार की आग' इन दो उपन्यासों की विशेषताओं से हमे उनकी आँचलिक दृष्टि का पता चलता है। जोशी जी हिमाचल प्रदेश के पहाड़ी अंचल में रह चुके हैं। उनका पूरा बचपन इस अंचल में बीता है। इसी कारण वे वहाँ की हर बात से परिचित हैं, जिससे उनके आँचलिक उपन्यासों में वहाँ की स्थितियों का हू-ब-हू वर्णन मिलता है। वहाँ के अज्ञा-नी, धार्मिक, अंधविश्वासी तथा परंपराप्रिय समाज का चित्रण बड़ी सुंदरता से किया है। समाज की खोखली न्यायव्यवस्था तथा सरकारी योजनाओं का अनुचित लाभ उठानेवालों की निंदा की हैं। दोनों उपन्यासों में पहाड़ी प्रदेश के जन-जीवन की व्यथा, वेदना, पीड़ा आदि का वर्णन किया है। समाज जीवन का यथार्थ चित्रण उनके आँचलिक उपन्यासों में मिलता है। उन्होंने आदमी की जिंदगी को कथानक का आधार बनाया है लेकिन किसी एक व्यक्ति की अपेक्षा समाज चित्रण को महत्त्वपूर्ण माना है। समाज में स्थित राजनीतिक, सामाजिक, धार्मिक, आर्थिक, सांस्कृतिक आदि परिस्थितियों का सफलतापूर्वक चित्रण अनेक पात्रों के माध्यम से किया है। धार्मिकता के नामपर होनेवाले आडंबरों पर ताना मारा है। इसके साथ-साथ अनेक विवाह प्रकारों के माध्यम से स्त्रियों पर होनेवाले अन्याय, अत्याचार तथा नारी के प्रति समाज का दृष्टिकोण किस प्रकार होता है, इसे स्पष्ट रूप से उभारा है। विवाह के नामपर स्त्रियों कों किस तरह लूटा जाता है, इसके वर्णन पर उनका अधिक जोर है। उपर्युक्त सभी विशेषताओं में से सबसे श्रेष्ठ विशेषताओं के रूप में अज्ञानी, परंपराप्रिय

समाज, अंधविश्वास और स्त्रियोंपर होनेवाले अन्याय, अत्याचार सम्मिलित हैं। समाज में जीवन जीने के लिए किस प्रकार के कष्ट उठाने पड़ते हैं तथा किस प्रकार गुलामों जैसी जिंदगी जीनी पड़ती है, इसका भी वर्णन मिलता है। इससे उन्होंने जीवन के व्यापार को समझाने का प्रयत्न किया है। कौतुहल बढ़ानेवाली एक साथ अनेक अनर्थ घटनाओं को स्पष्ट कर आश्चर्य की भावनाओं का सूक्ष्मता से वर्णन करने में जोशी जी खरे उतरे हैं। 'अरण्य' और 'कगार की आग' दोनों उपन्यास आँचलिक हैं। इसी कारण पात्रों की भरमार होना आँचलिक उपन्यासों का वैशिष्ट्य है। दोनों उपन्यासों में भी पात्रों की संख्या अधिक है। उनकी अपनी-अपनी विशिष्टता है। कथा हर पात्र के इर्द-गिर्द घूमती है। पात्रों की भरमार होने पर भी उनका अपना-अपना महत्त्व स्थापित करने में जोशी जी सफल हुए हैं। इसमें स्त्री पात्र, पुरूष पात्र, नायक, खलनायक, मजदूरी करनेवाले पात्र तथा भारतीय संस्कृति को जतन करनेवाले स्त्री पात्र आदिओं को दर्शाया है।

सामाजिक कुप्रथाओं के विरोध में विद्रोह करनेवाले पात्रों के माध्यम से समाज में स्थित बाह्याडंबर, अन्याय, अत्याचार, स्वार्थी भावना आदि पर तीखा व्यंग्य किया है जिससे क्रांति की नई चेतना उमड़ आती है। इसके साथ-साथ मनोवैज्ञानिक धरातलपर पात्रों की परिवर्तित मनस्थिति का वर्णन किया है। पात्रों की अंतर्बाह्य स्थिति का सूक्ष्मता से चित्रण करने में लेखक सफल हुए हैं। पात्र व्यसन क्यों करते हैं ? नवयुवक परंपराप्रिय समाज का विरोध क्यों करते हैं ? आदि अनेक सवालों के उत्तर इसमें मिलते हैं। युगीन समस्याओं में अनेक समस्याएँ सम्मिलित मिलती है, जिसमें बेकारी, भुखमरी, महँगाई, अशिक्षा, अज्ञान, विवाह संबंधी समस्याएँ, परिवार विभाजन, स्त्रियों पर होनेवाले अत्याचार, द्वेष, पीड़ा, मकान समस्या आदि अनेक समस्याओं का बड़ी कुशलता से उद्घाटन किया है। इन समस्याओं से उत्पन्न शोषण, अत्याचार तथा राजनीतिकता पर सूक्ष्म दृष्टि से अध्ययन उनका कर्तव्य रहा है। आजादी के बाद निम्नवर्ग की उन्नति के कानून में किस प्रकार अड़गाव आते हैं और लोग रोजी-रोटी के लिए किस प्रकार तरसते हैं, इसका यथावत् वर्णन इन दो उपन्यासों में मिलता है। खोखली आजादी तथा खोखली न्याय व्यवस्था और संपत्ति के बलपर शासनकर्ता बननेवालों पर तीखा व्यंग्य किया है। स्वातंत्र्योत्तर ग्रामजीवन में अपेक्षित परिवर्तन नहीं आया, ऐसा उनका कहना स्पष्ट रूप से दिखाई देता है। उपन्यास पर वर्णनात्मकता का बंधन होता है। अगर ये बंधन नहीं होता तो वह निबंधवत् समझा जाएगा। इसी कारण आवश्यक विस्तार वर्णन महत्त्वपूर्ण माना जाता है, जिसका पालन जोशी जी ने अपने दोनों उपन्यासों में किया है। आवश्यक विस्तार वर्णन के लिए उन्होंने प्रकृति का मानवीकरण, काव्यात्मक वर्णन, अलंकारों का प्रयोग, छोटे-छोटे संवाद, कथा-उपकथा का संबंध, साहुकारी

भाषा आदि का उपयोग किया है, जिससे कथानक में सुसूत्रता मिलती है। स्थानीय कहावतें, मुहावरें, लोकोक्तियाँ, गालियाँ तथा छोटे संवादों से वर्णनात्मकता का खंडन किया है। आँचलिकता को स्पष्ट रूप से दिखाने के लिए वहाँ के उत्सव, पर्व, त्यौहार, मेले, लोकगीत, लोकजीवन को लोकसंस्कृति के रूप में दिखाने का प्रयास किया है। 'अरण्य' और 'कगार की आग' उपन्यासों में विभिन्न आँचलिक शब्दों का चयन बड़ी सुंदरता से किया है। जोशी जी ने अरबी-फारसी, ब्रज, अपभ्रंश आदि भाषा के शब्दों का उपयोग न कर स्थानीय बोली भाषा का अधिक मात्रा में प्रयोग किया है। इनमें कुछ जगहों पर सरकारी कामकाज हेतु आये कुछ अंग्रेजी शब्द भी मिलते हैं लेकिन स्थानीय बोली का स्थान महत्त्वपूर्ण है। दोनों उपन्यासों के साम्य भेद में अधिक मात्रा में साम्य मिलता, जो इतना है कि सिर्फ पात्रों के नाम बदले है ऐसा लगता है। इन सारी विशेषताओं के बावजूद जोशी जी की एक विशेषता हमारे सामने आती है, कि वे अपने दोनों आँचलिक उपन्यासों का अंतिम निर्णय पाठकों पर सौंपकर उन्हें सोचने के लिए विवश करते हैं।

: संदर्भ-संकेत :

(1) हिमांशु जोशी - अरण्य - पृ.114.

(2) वही, पृ.33.

(3) वही, कगार की आग - पृ.20.

(4) वही, अरण्य - पृ.44.

(5) वही, कगार की आग - पृ.62.

(6) वही, पृ.84.

(7) प्रा.कृ.ज.वेदपाठक - साहित्य सिद्धांत एवं समीक्षा - पृ.54.

(8) हिमांशु जोशी - अरण्य - पृ.72.

(9) वही, कगार की आग - पृ.53.

(10) वही, पृ.15.

(11) वही, पृ.37.

(12) वही, अरण्य - पृ.103.

(13) वही, पृ.46.

(14) वही, पृ.14.

(15) वही, कगार की आग - पृ.24.

(16) वही, अरण्य - पृ.23.

(17) वही, कगार की आग - पृ.96.

****